

कोई
पुस्तक
नहीं

शब्द

५५

लगभग साठ वर्ष पुराना है। अब
गया है। शास्त्र पर मेरी श्रद्धा
'हिरण्ययो अरणी यं निर्मन्ध तां
मे मासि सूतवे" ऋ १०-१८४३
सि सूतवे पर विचार किया। इन

तकनीकी शब्दों में गम्भीर रहस्य मिला साथ ही आज की नई
पीढ़ी और उसकी दशा और दिशा को देखा। निष्कर्ष पर पहुँचा
कि हम मूल से अलग हो गये हैं और पत्तों को सींच रहे हैं। मैंने
सूचित किया है कि पाठक मूल से जुड़े और परिवार वृक्ष हरा भरा
हैं।

कृतज्ञता प्रकाशन

सर्व प्रथम मैं परम पिता परमात्मा का आभारी हूँ जिसने
मुझे सदैव विद्वान सज्जनों का सङ्ग दिया और वैदिक साहित्य में
रुचि उत्पन्न की। स्व० श्री विश्वनाथ विद्यालंकार प्रधान आर्य
समाज भारत नगर गाजियाबाद ने यदि मुझे आर्य समाज के पद
को छोड़ स्वतन्त्र स्वाध्याय और लिखने के लिए प्रेरणा न दी होती
तो मैं भवन निर्माण ही करता रहता। और स्वाध्याय शून्य रह
जाता। एतदर्थ वे प्रेरणा स्रोत धन्यवाद के प्रथम पात्र हैं। श्रीमती
शिल्पा देवी तो इस लेख की प्राण हैं। उनकी ही प्रेरणा से मैंने

यह लेख आरम्भ किया है। श्रीमती सरस्वती तिवारी ने भी इस विषय पर लिखने को उत्साहित किया। आर्य समाज खाजपुर नया गांव बुलन्दशहर के सदस्यों ने इसे मुद्रित कराने में पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया और उत्साहित किया। श्री ओमप्रकाश आर्य सेवक गाजियाबाद की। "मेरी मां गेरावाली है" कविता ने मेरे हृदय में कवि को जाग्रत किया तथा श्री वेदभानु आर्य सम्पादक महर्षि सन्देश गाजियाबाद ने मेरे लेख की समीक्षा की और यत्र-तत्र न्यूनताओं को दूर किया तथा मेरे पड़ोसी श्री होती लाल गुप्त ने सम्पूर्ण लेख को अपने हस्तलेख में लिखा है। मैं उक्त सभी महानुभावों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकाशित करता हूँ तथा इनके सुख समृद्धि पूर्ण स्वस्थ दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ।

गणपति शर्मा वैद्य

जो इस में अंकित नियमों पर,
संभल कर कदम उठायेगा।
वह ही प्राणी अपनी संतती को,
कष्टों से मुक्त करायेगा ॥

एक सम्मति

मैं वर्षों से राजकीय चिकित्सालय में स्वास्थ्य निरीक्षिका के पद पर कार्य कर रही हूँ, मैंने बहुत से बच्चों को जो पैदा ही अन्धे वहरे लंगड़े लूले होते हैं, इसका क्या कारण है? घर में आकर विचार किया, इस बात का कोई हल जरूर निकालना

चाहिए, इस सम्बन्ध में मैंने अपने पति श्री गणपति शर्मा वैद्य से विचार विमर्श किया। उन्होंने आयुर्वेद के ग्रन्थों का जिसमें सुश्रुत-चरक मनुस्मृति-सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि-उपनिषद माधव निदान देश दर्शन पुराण आदि का स्वाध्याय किया जिससे पता चला कि बच्चे के विकलांग पैदा होने का कारण इस स्त्री जाति की अज्ञानता और हठधर्मी, लापरवाही है। जो इस माता और उत्तम संतान में लिखा गया है। जिसकी भाषा सरल, रोचक और सहज बोधक है। मैं आशा करती हूँ कि मेरी बहनें इसको ध्यान पूर्वक पढ़कर जो कुछ इसमें लिखा है उसके अनुसार नियमों का पालन करेंगी; उसके बाद जो भी संतान आप पैदा करेंगी मैं आशा करती हूँ इस संतान को विकलांगता से बचा सकेगी। मैं आशा करती हूँ मेरी बहनें इसे ध्यान पूर्वक पढ़कर जरूर लाभ उठावेंगी जिसमें सन्तान की भलाई हो। आगे को पैदा होने वाले बच्चे विकलांगता से बच जायेंगे। अगर मेरी बहनें इसमें गर्भ उपघात पर ही सावधानी से रहेंगी जो गर्भ धारण करने के बाद पैदा होने वाले दोष है, इससे भी आपकी संतान बची और सुखी रहेगी।

कौशल्या देवी

स्वास्थ्य निरीक्षिका

१००, राधा नगर बुलन्दशहर

“मातृमान् पितृमान् आचार्यवान्
पुरुषो वेदः”

यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है, जब तीन उत्तम

शिक्षक माता-पिता और गुरु तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है वह कुल धन्य है, वह सन्तान बड़ी भाग्यवान है जिसके माता पिता धार्मिक विद्वान हो जितना माता से सन्तान को उपदेश मिलता है उतना किसी से नहीं। जितना सन्तान पर प्रेम और हित माता कर सकती है उतना कोई और नहीं कर सकता। धन्य वह माता है जो गर्भाधीन से लेकर जब तक विद्या पूरी न हो जाये तब तक सुशीलता का उपदेश करती रहे। माता पिता को उचित है कि गर्भाधान से पूर्व-मध्य और पश्चात् मादक द्रव्य मद्य दुर्गन्ध रूक्ष वृद्धि नाशक पदार्थों को छोड़कर जो भ्रांती और आरोग्य वल वृद्धि पराक्रम और सुशीलता से सभ्यता को प्राप्त करें। वैसे अन्नपान घृत-दुग्ध मीठा आदि अच्छे पदार्थों का सेवन करें कि जिससे रज वीर्य भी दोषों से रहित होकर अति उत्तम गुण युक्त हो जैसा ऋतुगमन की विधि अर्थात् रजोदर्शन से पांचवें दिन से लेकर सोलह दिन तक ऋतुदान देने का समय है, इन दिनों में प्रथम चार दिन त्याज्य हैं, बाकी रहे बारह दिन इन दिनों में एकादशी (ग्यारहवीं रात्री) और त्रयोदशी (तेरहवीं रात्री) को छोड़ कर बाकी दस दिनों में गर्भाधान करना उत्तम है और रजोदर्शन के दिन से लेकर सोलहवीं रात्री के पश्चात् समागम नहीं करना पुनः जब ऋतुदान का समय पूर्वाक्त न आवे तब तक और गर्भ स्थिति के पश्चात् एक वर्ष तक संयुक्त न हो जब दोनों के शरीर में आरोग्य परस्पर प्रसन्नता किसी प्रकार का शोक ना हो जैसा कि चरक सुश्रुत में भोजन आदि खाने का विधान है, और मनुस्मृति में स्त्री पुरुष की प्रसन्नता लिखी है, उसी प्रकार करें और बरतें। गर्भाधान के बाद स्त्री को बहुत सावधानी से भोजन छादन करना चाहिए। पश्चात् एक वर्ष पर्यन्त स्त्री पुरुष का संगम न

करें। तब तक स्त्री बुद्धि बलरूप आरोग्य पराक्रम के शान्ति और गुणकारक द्रव्यों का ही सेवन करती रहे। कि जब तक सन्तान का जन्म न हो।

सत्यार्थ प्रकाश

माता गायत्री की प्रार्थना

ओं३म् भू भुवः स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धी महि,
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

ओं३म् हो रक्षक हमारे सब गुणों की खान हो ।

भूः— सदाँ सब प्राणियों प्राण के भी प्राण हो ॥

भुवः— सब दुखों को करते दूर भगवान आप हो ।

स्वः— सदाँ सुख रूप सुख मय सुख सुखाधि महान हो ॥

तत्— वही सुप्रसिद्ध ब्राह्मण वेद वर्णित सार हो ।

सवितुः— सर्व उत्पादक हो पालन हार आप हो ॥

वरेण्येः— वरण करने योग्य भगवान आप हो ।

भर्गोः— मल रहित निर्लेप हो निष्पाप हो ॥

देवः— गुण देव स्वरूप देव अनूप के ।

धी महिः— धार हृदय में दिव्य गुण गुण रूप के ॥

धियो यो नः— वह हमारी बुद्धियों का हित करें ।

अंमर प्रचोदयात् नित सन्मार्ग में प्रेरित करें ॥

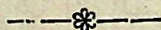
❀ विनती ❀

हे प्रभू तुम शक्ति शाली हो बनाते सृष्टि को ।
वेद सब गाते तुम्हें हैं किजिये धन वृष्टि को ॥

प्रेम से मिल कर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो ।
पूर्वजों की भांति तुम कर्तव्य के मानी बनो ॥

हों विचार समान सबके चित्त मन सब एक हों ।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग पा सब नेक हो ॥

हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा ।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बड़े सुख सम्पदा ॥



❀ गायत्री गान ❀

गायत्री मां तू सब की रक्षक और प्राण आधार है ।
तू ही है जगत विधाता और पालन हार है ॥
दुःख विनाश कर सुख की दाता और करुणा कन्द है ।
तू ही है मां तेज बलधारी और सर्वानन्द है ॥

पाप का नाश करो सुमति प्रदान करो तू ही देने हार है ।
तेरा ही माँ सब कुछ जग में तेरा ही संसार है ॥

तू ही है मां पूज्य हमारी तेरा नित हम पूजन करें ।
तेरे ही मां जप से हम शुद्ध अपना मन करें ॥

वेद चारों लोक सारे महिमा को गाते तेरी ।
 छूछ जाते दुःख सारे जो शरण आते तेरी ॥

तेरे ही मां प्रताप से हम सब बने परमार्थी ।
 तेरे ही प्रचार में हों सबी पुरुषार्थी ॥

श्रद्धा के कुछ फूल लेकर दर पे आये कर भला ।
 कीजिए स्वीकार हम को दीजिए दर्शन दिखा ॥

—कौशल्या देवी शर्मा

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।

यद्भद्रं तन्न आसुव ॥

उत्तम सन्तान

भारत के प्राचीन शास्त्रों से पता चलता है कि हमारे पूर्व पुरुषों ने संतान के विषय में बहुत कुछ अनुसंधान किया है । प्राचीन आचार-प्रणाली से यह विदित होता है कि उन लोगों ने केवल विचार ही नहीं किया था बल्कि वे इस विषय के व्यवस्थापित विषयों के अनुसार चलते भी थे । राम और कृष्ण सत्यवक्ता हरिश्चन्द्र, भीष्म पितामह, हनुमान, महारथी अर्जुन, भीम, शिव, भोज, कालिदास, भवभूति दण्डी, वेदव्यास आदि । स्त्री जाति में सीता, सावित्री, द्रौपदी आदि देवियों ने समाज का कमान बढ़ाया । सबसे पूर्व लोगों की आचार प्रणति पर पूरा

ध्यान रखा और कहीं पर भी किसी नियम का उल्लंघन नहीं किया। इस बात का गर्व प्रत्येक भारतवासि को होना चाहिए। संसार में प्रत्येक कार्य नियम पूर्वक होता है। दृष्टि जहां तक जा सकती है और बुद्धि जहां तक अपना कार्य कर सकती है, पृथ्वी में कोई बात नियम विरुद्ध नहीं दिखाई देती। पृथ्वी, आकाश, तेज वायु, प्रकाश, गृह, नक्षत्र, चन्द्र, सूर्य आदि सभी नियमानुसार अपना कार्य करते हैं। प्रकृति ने प्रत्येक कार्य के लिए नियम बना रखे हैं, उन्हीं नियमों को ईश्वरीय भेद गुप्त रहस्य अमोघ भक्ति और गणित विद्यायें का खजाना कहा जाता है। मनुष्य जाति की भलाई और श्रेय इन्हीं प्राकृतिक नियमों के ज्ञान पर निर्धारित है। ज्यों, ज्यों मनुष्य की बुद्धि विकसित होती या बढ़ती जाती है, त्यों त्यों वह इन नियमों के भेद को समझता जाता है। त्यों त्यों मनुष्य का श्रेय और विशेषता बढ़ती जाती है और यह संसार में बड़े महत्वपूर्ण और आश्चर्य जनक कार्य करने में समर्थ होता जाता है। मनुष्य जाति की उन्नति और लाभ के लिए इन नियमों का ज्ञान लेना बहुत जरूरी है। जिन जातियों में इस ज्ञान का अभाव है, जो इन नियमों से अनभिज्ञ हैं, वे इस संसार में अज्ञान, अन्धकार और अधोमत्ती के दलदल में फंसकर मर मिटता है। और जो जातियां इन प्राकृतिक शक्तियों, रहस्यों और नियमों को जान लेती हैं और उन्हीं के अनुसार कार्य करती हैं, वे संसार में सबसे अधिक उन्नति कर लेती हैं। वे जातियां मार्ग दर्शिका और नेत्री होती हैं। इन्हीं प्राकृतिक ज्ञान से विद्वान लोगों ने कई प्रकार के आविष्कार किये हैं। भाप, विजली, हवाई जहाज आदि इसी ज्ञान के फल हैं। हीरा और नीलम जैसे बहुमूल्य रत्नों के बनाने का यत्न विद्वानों ने किया और उन्हें सफलता हुई। पहले इस बात का ज्ञान प्राप्त किया गया कि हीरा या नीलम किन किन पदार्थों से बने हैं, उनमें कौन कौन पदार्थ कितने कितने अंश में

मिलाये जाते हैं। पृथ्वी के अन्दर कितने कितने दवाव और गर्मी से तैयार हुए हैं। और फिर उन्हीं पदार्थों को उतने ही अंश में अपनी निश्चित रीति से मिलाकर आवश्यक गर्मी और दवाव पहुँचा कर, हीरा और नीलन बना लिए जाते हैं।

माता का गर्भस्थान भी एक प्रकृति की प्रयोगशाला है। इस प्रयोगशाला में बहुमूल्य और सस्ते हर तरह के मनुज्ज रत्न ठीक इसी प्रकार तैयार किए जाते हैं। जिस प्रकार रस-शाला में रस-मात्र में रस-शाला में रसायनों की बुद्धि-यन्त्रों की उत्तमता तथा पदार्थों के उचित अंश मिश्रणपर पदार्थों की उपयोगिता में अधिकता या न्यूनता होती है।

कांच के कारखाने में कांच के भावे की जाति के अनुसार न्यनाधिक निर्मल और पारदर्शक वस्तुएँ बनती हैं। सुई, कारीगर और मशीन की उत्तमता के अनुसार सुन्दर और टिकाऊ या भद्दे कमजोर कपड़े बनते हैं। कुम्हार जिस तरह की मिट्टी का प्रयोग करता है चाक के ऊपर जैसा आकार देता है जिस सावधानी और चतुरता से उसे पकाता है वैसे ही उत्तम या निकम्मे पात्र तैयार होते हैं। मिट्टी में से निकलने के पश्चात् पात्रों पर चाहे कैसा भी रंग चढ़ा दिया जाय चित्रकारी की जाय इससे उनकी सुन्दरता कुछ बढ़ सकती है किन्तु पात्रों का वास्तविक मूल्य उपयोग में लाई हुई मिट्टी या साँचे या चाक पर हुए आकार से मा चतुराई के साथ पकाने से ही आँका जाता है। बाल रूप पुतला माता के गर्भ रूपी साँचे में ढलकर तैयार होता है, उत्तम या मध्यम पदार्थों का प्रयोग इस महान रस-शाला में किया जाता है। वैसा ही अच्छा या बुरा पुतला तैयार होता है। यदि चतुर रसायनिक माता पिता ने हीरा बनाने का मसाला इकट्ठा करके उसे उचित

समय और निश्चित रीति से सावधानी के साथ मिलाया जाये तो बहुमूल्य हीरा तैयार होता है ।

यदि नीलम के मसाले से काम लिया तो नीलम तैयार होता है । यदि कांच बनाने वाले पदार्थों का प्रयोग किया तो कांच प्राप्त होता है । राम, और रावण कृष्ण और कंस, युधिष्ठिर और दुर्योधन, पृथ्वीराज और जयचन्द, जैसे उत्तम और अधम मनुष्यों की रचना माता के ही गर्भ में हुई है । अन्तर केवल पदार्थों की उत्तमता या अधमता का ही है । जैसे पदार्थ का प्रयोग हुआ प्राकृतिक प्रयोग शाला से वंसा ही वस्तु बन कर बाहर निकली । राम या रावण, कौशल्या केकई को पैदा करना अब भी हमारे आधीन है । जैसा मसालों का प्रयोग किया जायेगा । वंसा ही संतान प्रयोगकोला से तैयार होगी । यह प्रकृति का अटल और निर्विवाद नियम है । अतः विचार इस बात पर करना है कि इच्छानुसार उत्तम संतान उत्पन्न करने के लिए किन किन पदार्थों की आवश्यकता पड़ती है, जिसके प्रयोग से उत्तम संतान पैदा हो सके ।

प्रकृति - इच्छा

जिधर आंख उठा कर देखिये प्रकृति की विचित्र लीलायि दिखाई देती हैं, सृष्टि की प्रत्येक बात अपूर्व रहस्य से भरी हुई है । प्रकृति जिस अनुपम रीति से सृष्टि के विस्तार का कार्य करती है उस पर जितना भी ध्यान दीजिए उतना ही आनन्द

और आश्चर्य होता है। प्रकृति ने इस विचित्र संसार में असंख्य प्राणी वर्ग उत्पन्न किए हैं, और वह प्रत्येक वर्ग के निरन्तर स्थिर रखने का पूर्ण यत्न करती है। किसी जाति या श्रेणी के जीवों का अन्त नहीं देखना चाहती वह उनकी वृद्धि बड़ी ही उदारता से करती है, जैसा बताया जा चुका है कि जहां उसे एक वट वृक्ष उत्पन्न करना होता है, वहां, वह लाखों बीजों को डालती है यद्यपि एक वृक्ष के लिए एक ही बीज काफी है किन्तु संयाने वश यदि वह बीज नष्ट हो जाये और वृक्ष न पैदा हो सके तो प्रकृति के विस्तार कार्य में बाधा पड़ जाये। इसलिए वह अत्यंत उदारता के साथ लाखों बीजों से काम लिया करती है जिससे कि नष्ट होते होते भी दो एक नये वृक्ष पैदा हो जाय।

मानव जाति के विस्तार और आस्तित्व के लिए उसमें कम बुद्धि खर्च नहीं की है। उसने इस जाति के प्रत्येक प्राणी को स्वतन्त्र रखते हुए प्रेम बन्धन में ऐसा जकड़ रखा है कि वह हिल नहीं सकता। प्रेम एक सेसी कड़ी है कि जिससे मनुष्य का किसी से छुटकारा ही नहीं संसार के प्रत्येक स्त्री पुरुष को बच्चे से लेकर-बूढ़े को, राजा रंक, गृहस्थ सन्यासी, सभी को इस विभूति के आधीन रहना पड़ता है। किसी न किसी से प्रेम रखना पड़ता है ईश प्रेम देश प्रेम, जाति प्रेम, कुटुम्ब प्रेम माता पिता भाई बहन पुत्र और पत्नि आदि का प्रेम इस प्रकार किसी न किसी प्रेम के बन्धन में। जितने बन्धन प्रेम है, सब मानव जाति की स्थिति विकास और विस्तार में सहायता देते हैं किन्तु इन सबों से अधिक शक्तिमान स्त्री विषयक प्रेम है। यह वह शक्ति है, जो मानव को बदल देती है। स्त्री पुरुषों की काया पलट कर देती है। उसके स्वभाव में उसके आचरण में उसके जीवन में परिवर्तन कर देती

है। इस प्रेम से उसकी भावना उसके विचार उसकी बुद्धि उसकी प्रतिभा उसकी सदाचार शीलता और उसका संकल्प भक्ति में विजली की सी संजीवनी भक्ति उत्पन्न हो जाती है।

जंगली, सभ्य, निर्दयी दयालू, डरपोक वहादुर और सुखं विद्वान वन जाता है। प्रकृति ने स्त्री पुरुषों में ऐसी आकर्षण शक्ति उत्पन्न कर रखी है कि वे एक दूसरे की सुन्दरता पर या गुणवत्ता पर ऐसे मुग्ध हो जाते हैं कि अपने आपको भूल जाते हैं देखने से छुने से प्रेम पात्र के विषय में बात करने से या बात सुनने से हृदय द्रवित हो जाता है। प्रेम पात्र के ध्यान मात्र से प्रत्येक शारीरिक ज्ञान तन्तु उत्तेजित और प्रफुल्लित हो उठता है। चेहरे पर ललाई और प्रसन्नता आंखों में चमक और चंचलता और आनन्द और उत्साह की लहरें उमड़ पड़ती हैं। दो शरीर एक प्राण का सच्चा उदाहरण यही प्रेमी और प्रेमिका का जोड़ा है। स्त्री और पुरुष इन दो पृथक् प्राणियों को एक कर देने के लिए इनको एक दूसरे में लीन, तन्मय कर देने के लिए, मिला देने के लिए प्रकृति ने इस प्रेम भक्ति को पैदा किया है।

जीवन काल में एक ही जन से पूर्ण प्रेम होता है और यही प्रेम के बन्धन से बन्धी हुई दो शक्तियाँ वैवाहिक सम्बन्ध से जुड़ कर दम्पति बनते हैं। उचित भी यही है कि जो एक दूसरे को हृदय से प्रेम करते हों वे ही वैवाहिक सम्बन्ध करें। सामाजिक और मानसिक झुकाव भी इसी ओर होता है, कि जीवन मात्र में केवल एक ही प्रेम पात्र हो, किन्तु प्रकृति का रूख दूसरा ही है। प्रकृति सामाजिक या मानसिक भाव की ओर ध्यान नहीं देती वह केवल अपनी वंश वृद्धि की बात देखती है। इस भय से

कि यदि किसी कारण एक प्रेमी और प्रेमिका में वियोग हो जाये अथवा उनमें से किसी एक की मृत्यु हो जाये तो सन्तान वृद्धि का कार्य बन्द हो जाएगा। वह एक व्यक्ति के प्रेम को काफी नहीं समझती वही दशा पुरुष की होती है। अपनी पहली प्रेमिका के अतिरिक्त जब वह किसी दूसरे की सुन्दरता पर या गुणों पर मुग्ध हो जाता है तब स्वभावतः उसकी ओर झुक जाता है। चित्त आकर्षित होता है किन्तु इस भय से कि नयी प्रेमिका से पुरानी को दुख होगा, उसकी ओर से मन फेरना आरम्भ कर देता है।

इन स्त्रियों के पुरुष की ओर आकर्षित होने में और पुरुषों के स्त्रियों की ओर खिंचने में उनका दोष नहीं है। यह प्रकृति का रहस्य है, उसके सन्तान वृद्धि कार्य में बाधा न पड़े इसीलिए यह युवा और युवतियों को यह वशीकरण का खेल खिला कर उनको चलायमान किया करती हैं। मनुष्य आनन्द की ओर स्वयं ही आकर्षित होता है। आनन्द की ओर आकर्षित होना उसकी प्रकृति या स्वभाव है। संसार में मनुष्य उसी कार्य की तरफ अनुराग प्रकट करता है जिससे उसे कुछ आनन्द मिलने की संभावना होती है। आनन्द चाहे क्षणिक हो चाहे स्थायी किन्तु यह तो सर्वथा निश्चित है कि मनुष्य यदि झूकेगा तो आनन्द की ओर, यदि उसे विश्वास हो जाए कि अमुक कार्य में लेश मात्र भी आनन्द नहीं है, तो यह उस कार्य के करने की चेष्टा नहीं करेगा।

विशेष प्रकार के आनन्द का समावेश कर रखा है। आगे चलकर मालूम होगा कि दम्पति के परस्पर के प्रेम से आनन्दमय जीवन से उमंग और उत्साह से संतान में उत्तमता आती है। उत्तम स्थिति में उत्पन्न होने वाली संतान उत्तम ही गुणों से विभूषित होती है। प्रेम पाने के साथ संतुक्त होने से गह्वर आनन्द प्राप्त होता है। उस आनन्द से उमंग और उत्साह बढ़ता है और उस उमंग और उत्साह के बढ़ने से स्थिति में उत्तमता आती है। गर्भाधान के समय दम्पति की जो मनोवृत्ति होती है वे जिस स्थिति में होते हैं उसका प्रभाव संतान पर पड़ता है। इसीलिए प्रकृति ने प्रेममयी संतानों की उत्पत्ति की क्रिया में एक विशेष प्रकार के आनन्द का समावेश कर रखा है। उपर्युक्त विवेचन से यह सिद्धान्त स्थिर होता है कि प्रकृति ने संतान उत्पत्ति के लिए संयोग और संतान को उत्तम बनाने के लिए उसमें आनन्द पैदा किया है। अधम काम वासना तृप्ति करने के लिए पृथ्वी ने आनन्द की सृष्टि नहीं की है। सृष्टि मात्र के पुरु और पक्षियों में जब कभी यह क्रिया होती है तब एक मात्र संतान उत्पत्ति के लिए होती है। संसार में एक मानव जाति ही ऐसी पाप कलुषित है जो मैथुन के आनन्द को एक बात और संतान उत्पत्ति को दूसरी बात मान बैठी है। बल्कि उसके समाज में क्षाणिक इन्द्रिय वासना की तृप्ति ही प्रथम बात समझी जाने लगी है। इस इच्छा को तृप्त करने से यदि गर्भ रह जाय तो हर इच्छा काम वासना की तृप्ति अपने भाग्य में है ही।

पश्चिमी अधम साहित्य ने भारत को और भी गारत कर रखा है। स्मरण रहे कि प्रकृति को धोखा नहीं दिया जा सकता

संतान उत्पत्ति के अतिरिक्त अन्य किसी भी हेतु से वीर्य पात करना पृथ्वी नियम के विरुद्ध कार्य करना है। इसका दण्ड हमें पृथ्वी दे रही है। पाप का प्राश्चित्त किये बिना उद्धार नहीं हो सकता। हम गिर तो गये ही हैं अब और नीचे न जाये वस इसी में कुशलता है। सावधान रहें।

—देश दर्शन



तमसो मा-ज्योतिमय

जब बच्चे का जन्म होता है, वो माता पिता बड़े प्रसन्न होते हैं, और उसी वक्त किसी ज्योतिषी की शरण में जाकर पहले तो कुछ भेंट चढ़ाते हैं फिर कहते हैं कि पंडित जी हमारे घर बालक ने जन्म लिया है। उसके भाग्य की जन्म पत्री बना दें, पंडित जी ने नक्षत्र आदि देखकर कहा कि यह बच्चा माता पिता के लिए कष्ट दायक है। अगर यह एक दिन पहले या पीछे पैदा होता तो बहुत अच्छा नक्षत्र था। वस माता पिता की

खुशी खत्म हो गई और मन में बैठी हुई भावना उस बालक के प्रति दुःख के रूप में बदल गई और बालक को देखकर यही भाव जाग्रत होता है यह तो हमारे लिए कंस पैदा हो गया, यह ही बात अगर गर्भाधान से पूर्व ज्योतिषी से पूछते तो वो जरूर बताता कि गर्भाधान के लिए यह नक्षत्र इस दिन पड़ेगा और उसका आने पैदा होने का भी समय बता देगा। वेद के आधार पर बच्चा दस मास के पूरे होते ही जन्म ले लेता है। तो ज्योतिषी बता देगा कि यह बच्चा इस मास इस तिथि-दिन नक्षत्र में पैदा होगा। जो बहुत ही शुभ है, देश और जाति की सेवा करने वाला; बुद्धिमान बलवान और पिता की सेवा करेगा।

दस मास में पैदा होने का हिसाब आप भी लगा सकते हैं। जैसे एक मासिक धर्म का समय, अट्ठाईस दिन का होता है, तो जान ले अट्ठाईस गुणा दस २८० दिन में बच्चा पैदा होगा। इससे गर्भाधान के दिन जो दिन नक्षत्र का भी पता लग जावेगा जैसे नक्षत्र सत्ताइस होते हैं। और मासिक धर्म अट्ठाईस का होता है। शास्त्रों में किसी-२ का मास मासिक धर्म-इक्कीस और छत्तीस दिन का भी लिखा है, जंसे दुर्योधन एक वर्ष के बाद पैदा हुआ था। कोई-२ बच्चा सात मास में भी पैदा हो जाता है। जो जीवित रहता है यह माता की कमजोरी के कारण पैदा होता है। और शरीर से कमजोर होता है। एक वर्ष में पैदा होने वाला बालक चिरंजीव, बलवान होता है। इन बालकों की बुद्धि कम होती है। २२८ दिन में पैदा होने वाला बालक सर्व गुण सम्पन्न होता है। इस बच्चे के गर्भाधान से लेकर पैदा होने तक माता को अपने आहार व्यवहार का ध्यान रखना चाहिए।



पुत्र या पुत्री

गर्भाधान के लिए शास्त्रकारों ने लिखा है। अगर पुत्र की इच्छा हो तो शुक्ल पक्ष की सत्र तिथियां अष्ठमी दसवीं द्वादशी में गर्भाधान करना चाहिए। जिस से पुत्र की प्राप्ति हो। अगर पुत्री की कामना हो तो शुक्ल पक्ष की विषम तिथियों में जैसे पंचमी सप्तमी नवमी तिथियों में गर्भाधान करें जिस से पुत्री की प्राप्ति हो। गर्भाधान का समय रात्री में पहर रात गये या पहर रात रहे करना चाहिए। यह समय रात्री ९ वजे से प्रातः ३ वजे तक का है। इस समय में जो पति पत्नि प्रसन्न चित्त होकर गर्भाधान करते हैं उनकी संतान पिता का ही रूप धारण करती है।

लोगों की धारणा है कि दिन की गणना रात्री १२ वजे पश्चात् शुरू होकर रात्री बारह वजे तक की जाती है। परन्तु शास्त्रकारों का विचार प्रातः सूर्य उदय के साथ दिन और रात्री की अही रात के रूप के गणना की जाती है। जो इस प्रकार है। भास्कराचार्य कृत सिद्धान्त शिरोमणी में आता है।

लंका नगर्यामुद्रयाच्य मानौ तस्यैव वारे प्रथम वभूत ।
मधोः सितार्देदिनमास वर्ष यूगादिकानां यूगपतप्रवृत्तिः ॥

अर्थात्-लंका नगरी में सूर्य के उदय होने पर उसी वार अर्थात् आदित्यवार में चैत्र मास पक्ष के आरम्भ में दिन मास वर्ष युगादि एक साथ प्रारम्भ हुये। इसी बात को हिमाद्रि में इसी प्रकार लिखा है।

चैत्र मासि जगद् ब्रह्मा सस्रज प्रथमेऽहीन ।

शुक्ल पक्षे समग्रन्तु तदा सूर्योदये सति ॥

अर्थात् चैत्र शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्य उदय के समय ब्रह्मा ने जगत की रचना की। इसीलिए स्पष्ट है कि युगादि का आरम्भ सूर्य उदय से माना गया है। सूर्य उदय से दूसरे दिन सूर्य उदय तक एक ही दिन रात माना जायेगा। इसी दिन में नक्षत्र तिथि आदि मानी जायेगी संस्कार विधि में लिखा है गर्भाधान पहर रात गये या पहर रात रहे करना चाहिए।

यहां एक शंका और पैदा हो जाती है कि एक मास में एक या दो तिथियां संयुक्त आती हैं जैसे १ अप्रैल ६० में कृष्ण पक्ष की है। दोनों एक ही हैं इसी प्रकार २६ अप्रैल ६० को शुक्ल पक्ष की प्रदिपदा और द्वितीया इक्कठी हैं। ऐसे समय में गर्भाधान नहीं करना चाहिए इस समय चन्द्रमा का प्रभाव स्त्री पुरुष दोनों पर पड़ेगा पता नहीं पुत्र की जगह पुत्री हो जाये या नपुसंक संतान पैदा हो सकती है क्योंकि चन्द्रमा का प्रभाव रजवीर्य दोनों पर एक सा पड़ेगा जैसे पर्व ग्यारहवीं तेरहवीं रात्री वर्जित है इन को छोड़ देना चाहिए। गर्भाधान के समय दिन तिथि नक्षत्र मासादि का ध्यान जरूर रखना चाहिए।



नक्षत्रों का ध्यान

जिस प्रकार वर्षा ऋतु में वारिष की एक बूंद स्वांति नक्षत्र में सीप में जा पड़े उस बूंद का मोती बन जाता है। वर्षा की बूंद स्वांति नक्षत्र में यदि सांघ के पुस में पड़े जाय तो विष बन जाती

है, और वर्षा की बृंद स्वाती नक्षत्र में केले के बीच में पड़ जाय का फूर बन जाता है। इसी प्रकार पुवान नक्षत्रों में किये गये गर्भाधान से एक सुशोग्य सन्तान पैदा हो सकती है। जिसमें पुण्य नक्षत्र का बहुत महत्व कहा है शुश्रुत चरक ने तो पुण्य नक्षत्र में गर्भाधान से पैदा लड़की हो या लड़का सुयोग्य संतानें ही होंगी अगर पुण्य नक्षत्र के साथ पुण्य दिन शुक्ल पक्ष की समतिथियां भी मिल जाय तो बहुत ही अच्छा है यह नक्षत्र भी तीनों जाति के हैं (पुल्लिंग स्त्रीलिंग नपुंसकलिंग)

पुल्लिंग— मृगशीर्ष—पुनर्वसु—पुण्य—हस्त—
स्त्रीलिंग— अश्विनी—भरणी—कृतिका—रोहिणी—भद्रा अश्लेष—मघ
उ० फाल्गुनि—पू० फाल्गुनि चित्रा—स्वाति—विशाल
अनुराधा—ज्येष्ठा—मूल्य पूर्वा पादा—उत्ररा पादा
खनिष्ठ—त्रवभिशाल।

उ० भाद्रपदा—पूर्वा—रेवती

श्रावण— नपुंसक लिंग—बहुत से विद्वान इसे पुल्लिंग भी मानते हैं। जिन नक्षत्रों में गर्भाधान होगा वैसी ही संतान होगी।

सूर्य-चन्द्र-नक्षत्र तिथि दिन का गर्भ पर पड़ने का प्रभाव

सूर्य के गुण पदार्थों तक : शरीर का पैदा करना, मारना
शुक्ल बनाना और बिगाड़ना, बढ़ाना और बढ़ने से रोक देना।

ये ६ गुणों का सूर्य का सब पदार्थों पर प्रभाव पड़ता है। सूर्य का स्त्रियों पर विशेष प्रभाव दस प्रकार से पड़ता है। १-मृदुता २-सुकमारता ३-कोमलता ४-थोड़े रोम ५-उत्साह ६-आँखों में स्वच्छता ७-शरीर की वनावट ८-पाचन शक्ति ९-दीप्ति १०-कांति ये दस गुण सूर्य के द्वारा स्त्रियों में पाये जाते हैं। सूर्य से ही प्राण शक्ति की उत्पत्ति होती है। चन्द्रमा सब जीवों में गुण पैदा करता है।

चन्द्रमा का प्रभाव तिथियों में

जैसे समुद्र अमावस्या के दिन किनारे छोड़ कर मीलों नीचे चला जाता है। और पूर्णमासी के दिन बढ़कर किनारों पर पहुँच जाता है। जिसे ज्वार भाटा कहते हैं। पुरुष जाति पर चन्द्रमा का ही प्रभाव पड़ता है। जिसके कारण पुरुष जाति को सोम गुण प्रधान माना जाता है। इसी लिए सम तिथियों में पुरुषों के वीर्य पर चन्द्रमा का प्रभाव पड़ने से वीर्य बलवान होता है। इसीलिए पुत्र पैदा होता है। चन्द्रमा का विषम तिथियों में स्त्री जाति के रज पर अधिक प्रभाव पड़ता है। इसी लिए रज बलवान होने से कन्या पैदा होती है। रज और वीर्य की समानता होने से नपुसक पैदा होता है। लोगों की धारणा है कि गर्भाधान के चौरासी आसन हैं यह धारणा गलत है सिर्फ एक ही आसन है। गर्भाधान के बाकी तीरासी आसनों से या तो संतान होती ही नहीं अगर होगी तो विकलांग होगी या नपुसक होगी। यह शुश्रूत का मत है।

नक्षत्र का प्रभाव

शरीर पर लिंगों में पड़ता है स्त्रीलिंग—वाइस—पुल्लिंग—चार नपुसंक लिंग एक—थावण नक्षत्र के नपुसंक और कई विद्वान पुल्लिंग भी मानते हैं इसीलिए पुसंवन संस्कार दूसरे मास में करा देना जरूरी है। इसलिए संस्कार का प्रभाव वक्चे के अंगों पर पड़ता है।

—गुथुत

❀ मन ❀

जब पुरुष संभोग के लिए तैयारी करता है तो उसके मन में संभोग की इच्छा मन के द्वारा जाग्रत होती है। परन्तु संभोग की क्रिया के लिए एक और शक्ति की जरूरत पड़ती है जिसके द्वारा पुरुष में संभोग करने की शक्ति पैदा होती है। अगर पुरुष को वह शक्ति न मिले तो पुरुष संभोग की इच्छा जो मन के द्वारा संभोगीय इन्द्रि को मिलती है तो पुरुष संभोग करने में असमर्थ रहता है। इस लिए उस शक्ति को प्राप्त करने के लिए पुरुष को स्त्री जाति की जरूरत पड़ती है। जो इस शक्ति का भण्डार है। वह शक्ति ऊर्जा शक्ति है, जो परमात्मा ने प्रकृति के द्वारा स्त्री जाति को ही प्राप्त करने का अधिकार दिया है। इसलिए स्त्री जाति को सूर्यगुण प्रधान बताया है। संसार में ऊर्जा शक्ति अग्नि के तेज से ही प्राप्त होती है, जिसके द्वारा संसार में बड़े बड़े उद्योग चलाये जाते हैं। इसीलिए स्त्री जाति अग्नि गुण प्रधान और पुरुष को सोम गुण प्रधान कहा है।

जैसे चन्द्रमा सूर्य से प्रकाश लेता है वैसे ही पुरुष स्त्री जाति से ऊर्जा शक्ति प्राप्त करता है, जिसके द्वारा पुरुष में संभोग करने की इन्द्रियों को शक्ति मन के द्वारा प्राप्त होती है। तब ही वह संभोग कर सकता है। संसार में जितने भी मनुष्य जाति ने अपने लिए सुख के साधन, जैसे मोटर साईकिल कार रेल हवाई जहाज आदि शीघ्रगामी पदार्थ तैयार किये हैं। इन सबके लिए ऊर्जा शक्ति की जरूरत है। वह पेट्रोल से पैदा होती है। जिसके द्वारा यह गतिशील होते हैं। और सब कार्य बड़ी जल्दी जल्दी हो जाते हैं। पुरुष को भी इसी ऊर्जा शक्ति की आवश्यकता होती है। जो स्त्री से प्राप्त होती है, उसी से वह संतान आदि प्राप्त करने का कार्य करता है। स्त्री जाति को ऊर्जा शक्ति कहीं से प्राप्त करने की जरूरत नहीं क्योंकि वह स्वयं ऊर्जा का भण्डार है।

संतान पैदा करने के लिए चार चीजों की जरूरत है। शुद्ध योनि, शुद्ध गर्भाशय, शुद्ध आर्तव (रज) और शुद्ध वीर्य इन से संतान की प्राप्ति होती है। जिस प्रकार पुरुषों में वीर्य सातवीं धातु है, इसी प्रकार स्त्री जाति में रज सातवीं धातु है। स्त्री जाति में वीर्य आठवीं धातु माना जाता है स्त्री के वीर्य का गर्भाशय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, जैसे पुरुष वीर्य शरीर के सब अंगों से बाहर आता है और गर्भाशय में प्रवेश करता है तो उस आर्तव (रज) में एक डिम्ब पैदा होता है जो ५ मास में तैयार होता है। गर्भाशय शुद्ध होने के बाद (मासिक धर्म से) उस डिम्ब में शुक्रजीव प्रवेश कर जाता है जो दस मास के बाद पैदा होता है। स्त्री जाति पुरुष की तरह स्खलित नहीं होती है, होती भी है तो बहुत कम होती है परन्तु पुरुष जाति को जो आनन्द स्खलित

होने में प्राप्त होता है वो आनन्द स्त्री जाति को भी मिलता है। उसका स्वरूप कुछ और होता है, वह आनन्द भी रोमांचिक होता है, उस आनन्द का प्रभाव स्तनों पर पड़ता है, जिससे स्तनों में दूध का रूप बन जाता है। सर्व देह व्यापी होने के कारण अंगों का छेदन कर देने पर भी जो शुक्र दिखाई नहीं देता वहीं शुक्र अभीष्ट युवती के दर्शन, स्मरण शब्द श्रवण और स्पर्श (मैथुन) से उत्पन्न, हर्ष से बाहर निकल पड़ता है। हर्षन के लिए मन की प्रसन्नता ही कारण है। आहार रस से उत्पन्न होने के कारण स्तन भी स्त्री प्रकार सर्वदेह व्यापी होता है। वहीं स्तम्य या दूध वच्चे के स्पर्श, दर्शन, स्मरण ग्रहण करने से (शिशुन द्वारा शुक्र के समान) स्तनों द्वारा बाहर निकलता है। और निरन्तर स्नायु में भी स्नेह ही कारण है।

—माधव

गर्भाधान की विधि

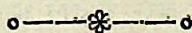
रात्रि में नियत समय पर जब दोनों के शरीर आरोग्य अत्यन्त प्रसन्न हो ओं दोनों में अत्यन्त प्रेम बढ़ा हो, उस समय गर्भाधान क्रिया करें। गर्भाधान क्रिया का समय पहर रात्रि गये या पहर रात्रि रहने तक का है। जब वीर्य गर्भाशय में आने का समय आवे तब दोनों स्थिर शरीर प्रसन्न वदन, मुख के सामने मुख नासिका के सामने नासिका आदि सब सीधा शरीर रखें, वीर्य का प्रक्षेपण पुरुष करे। जब वीर्य स्त्री के शरीर में प्राप्त हो उस समय

अंगना वायु मूल इन्द्री और योनि इन्द्री को ऊपर सकोच और वीर्य को खींचकर स्त्री गर्भाशय में स्थिर करे तत्पश्चात् थोड़ा ठहर कर स्नान करें। गर्भाधान का निश्चय हो जाने पर स्त्री को अपने आहार का ध्यान रखना चाहिए सात्विक आहार यह हैं - सेयां नमक, कम मीठा, ताजा फल, गो दुग्ध घृग, जौ चावल, गेहूं मूंग चना आदि खाने चाहिए।

पौष्टिक आहार : व्यवहार में जो सुखकारक कार्य ही करते रहना चाहिए शिक्षाप्रद पुस्तकें पढ़ने और अच्छे विचार वालों से मेल जोल रखें, समय पर खाना समय पर सोना, बहुत जरूरी है। हमेशा प्रसन्न चित्त रहना चाहिए जैसे जैसे बालक बढ़ता जाये, वैसे ही आहार बढ़ाते रहें, पारिवारिक वातावरण प्रसन्नता पैदा करने वाला होना चाहिए जिससे बच्चा स्वस्थ और बुद्धिमान बने, दूसरे मास पुसवन संस्कार का होना बहुत जरूरी है। अतः बच्चे के अंग प्रत्यग दूसरे मास से बनने लगे हो जाते हैं। जैसा बालक चाहिए वैसे विचार भी मन में धारण करें।

जीव जब गर्भाशय में प्रवेश कर जाता है तो वह एक बाल की जड़ का दस हजार वां भाग होता है, वह जीवन पुण्य और दिन नक्षत्र और तिथियों के अनुसार चन्द्रमा और सूर्य के प्रभाव से अपना रूप बनाता है। डेढ़ मास के बाद लिंगों में प्रवेश होता है। स्त्रीलिंग-पुंलिंग-इसीलिए शास्त्रकारों ने पुसवन संस्कार करने का विधान डेढ़ मास बाद शीघ्र ही कर देना चाहिए, इस संस्कार का प्रभाव स्त्री के द्वारा बच्चे के लिंग पर पड़ता है। अगर गर्भाधान का समय लड़के का है तो लड़का बलवान होगा।

अगर कन्या का है तो कन्या बलवान होगी। सन्तान विचारों से बनती है जीव शब्द पुलिंग है, जो जिस लिंग के पदार्थ में प्रवेश करेगा यह माता पिता के समय अनुसार विचारों से बनता है। अगर रज वीर्य समान बलवान होंगे तो पुसंवन संस्कार के द्वारा माता के विचारों से पूर्ण होगा वरना नपुसंक हो जावेगा। जैसे एक मूर्ति बनाने वाला मूर्ति बनता है। उसके ऊपर सचि के ऊपर मिट्टी आदि लगा कर पहले गिण्ड बनाता है। उसके बाद अंगों को बनाता है इसी प्रकार माता के आहार से बनने वाले रसों से उस जीव का शरीर बनना शुरू हो जाता है। जो दस मास में बन कर गर्भ से बाहर आ जाता है।



मासिक धर्म

स्त्री को चाहिए कि ऐसा स्थान जिसमें दीपक का ऐसा प्रकाश होना चाहिए जिसमें देखने में असुविधा ना हो, यह ऐसा समय होता है जैसे चित्र बनाने का कैमरा। कैमरे की फिल्म पर अगर प्रकाश पड़ेगा तो वह खराब हो जायेगी। उसमें बनने वाला चित्र भी साफ नहीं आवेगा। धुंधला आवेगा पहचानों भी नहीं जावेगा। यही स्थिति गर्भाशय की होती है। मासिक धर्म के बन्द होने पर गर्भाशय पूर्ण रूप से शुद्ध हो जाता है। मासिक धर्म का समय तीन से सात दिन का सुश्रुत ने कहा है कि इन दिनों में स्त्री को स्वयं ध्यान रखना चाहिए आहार व्यवहार आदि समय का। कमरे में मध्यम प्रकाश होना चाहिए, चटाई पर बैठना व

सोना चाहिए हाथ में प्लेट में या पत्तल में भोजन कराना चाहिए दूध घी, सांठी चावल, गैहू आदि सात्विक भोजन करना चाहिए एकान्त में बैठे परमात्मा का चिन्तन और वीरों की अच्छी कहानियों का विचार करना चाहिए। जैसे सन्तान की इच्छा हो उसका भी ध्यान पूर्वक मनन करना चाहिए। मासिक धर्म में दिन में सोने से निद्रालु संतान पैदा होगी। मासिक धर्म में रोने से विकृत दृष्टि संतान पैदा होगी। मासिक धर्म में अंजन लगाने से अंधी संतान पैदा होगी। मासिक धर्म में नहाना तथा तेल मालिश से कुष्ठ संतान पैदा होगी। मासिक धर्म में हसने से दांत काले रंग काला होगा। मासिक धर्म में नाखून काटने से नाखून खराब होंगे। मासिक धर्म में दातुन करने से दांत आगे पीछे आये खराब होंगे। मासिक धर्म में भागने से चंचल संतान पैदा होगी। मासिक धर्म में बहुत बोलने से वक्वादी संतान पैदा होगी। मासिक धर्म में ऊंचा शब्द सुनने से बहरी संतान पैदा होगी। मासिक धर्म में सिर में कंधी फेरने से गंजी संतान पैदा होगी। मासिक धर्म में वायु सेवन परिश्रय से पागल संतान पैदा होगी। यह सब दोष मासिक धर्म में इन कार्यों को करने से पैदा होते हैं।

—सुश्रुत

गर्भ उपघात

गर्भाविस्था में जब आहार व्यवहार में स्त्री के शरीर पर बुरा प्रभाव पड़ता है तो उससे हर समय दबी (डरी) रहने के

कारण तेज में कमी आ जाती है। जो चौथे मास में गर्भ की आंखों पर ना पढ़ने के या कम पढ़ने के कारण बालक की आंखों में दृष्टि कम होती है। या अन्धा पैदा होता है।

—सुश्रुत

गर्भावस्थापना में गर्भ के अन्दर वायु का प्रकोप होने से अथवा गर्भवती की श्रद्धा खण्डित होने से गर्भ कुबड़ा विकृत हाथों से पंगु लंगड़ा, गूंगा मिनमिना (तुतला) बोलने वाला होता है।

—सुश्रुत

पर्व

पर्व जोड़ मेल का नाम पर्व है। यज्ञोपवीत की गांठ का नाम पर्व है। शरीर के अंगों के जोड़ उनका नाम भी पर्व है। प्रतिपदा अमावस्या या पूर्णमासी प्रतिपदा का मेल पर्व ही कहलाता है। पर्व का सम्बन्ध अमावस्या पूर्णमासी से बहुत जुड़ा हुआ है। जोतिषियां पूर्णमासी और अमावस्या से मिली हुई हैं उनके मेल से पर्व ही माना जायेगा। जैसे प्रतिपदा चतुर्दशी हैं यह छः तिथियां हैं, दो प्रतिपदा दो चतुर्दशी पूर्णमासी और अमावस्या इन तिथियों के सम्बन्ध सूर्य चन्द्र ग्रहण से है। पूर्णमासी को चन्द्र ग्रहण और अमावस्या को सूर्य ग्रहण कहा जाता है। सूर्य और चन्द्र मा

के सम्बन्ध संसार भर के जितने पदार्थ हैं उन सबके साथ है। इन दोनों की शक्ति से संसार के जितने भी जीव हैं। सुखी जीवन व्यतीत करते हैं।

कभी सूर्य ग्रहण अमावस्या के लगते ही होता है। इस लिए चतुर्दशी का मेल होने के कारण सूर्य ग्रहण का प्रभाव चतुर्दशी पर भी पड़ता है वही ग्रहण यदि अमावस्या के अन्त में पड़ेगा तो ग्रहण का प्रभाव शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा पर पड़ेगा इसी प्रकार अगर चन्द्रग्रहण पूर्णिमा के लगते ही पड़ेगा तो इसका प्रभाव शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी पर भी पड़ेगा और अगर पूर्णमासी के अन्त पड़ेगा तो उसके साथ कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा पर पड़ता है। इसीलिए सूर्य और चन्द्रमा के ऊपर पड़ने वाले ग्रहण के कारण सूर्य और चन्द्रमा के तेज में कमी आ जाती है। जिसका प्रभाव सूर्य और चन्द्रमा के साथ सब पदार्थों पर पड़ता है।

इसीलिए इन पर्वों में होने वाले गर्भाधान से पैदा होने वाली संतान पर भी ग्रहण का प्रभाव पड़ता है। इसी कारण इन पर्वों में गर्भाधान वर्जित है। जिस प्रकार चन्द्रमा का प्रभाव पदार्थों पर उसकी गति जो बढ़ने घटने की है उसी प्रकार चन्द्रमा का तेज घटता बढ़ता रहता है। पूर्णमासी को चन्द्रमा पूर्ण होता है। उसी दिन प्रभाव भी पूर्ण होता है। इसी प्रकार सूर्य का हमेशा एक सा प्रभाव पड़ता है। इसीलिए गर्भाधान के लिए नक्षत्र दिन पर सूर्य का प्रभाव एक सा ही पड़ेगा। यही कारण है कि ग्यारवीं व तेरहवीं रात्रि गर्भाधान में वर्जित है। जैसे एक स्त्री को मासिक धर्म सक्रान्ति की (सौर पक्ष) माघ मास की पांच

तारीख को हुआ तो सौर पक्ष माघ मास की सोलह और अठारह तारीख वर्जित हैं। इसी लिए यह जो ग्यारहवीं और तेरहवीं रात्रि वर्जित है यह सूर्य मास में जब चाहे पड़ सकती है। किसी स्त्री को पौष मास की इक्कीस तारीख को मासिक धर्म शुरू हुआ तो दो माघ और चार माघ वर्जित हैं। इसी प्रकार अष्टमी वर्जित है। यह पौष माघ फाल्गुन की कृष्ण पक्ष की अष्टमी को श्राद्ध पर्व का दिन माना जाता है। इसलिए वर्जित है। इसलिए जिस प्रकार तिथियों का ध्यान होना जरूरी है, उसी प्रकार संक्रान्ति की ग्यारहवीं और तेरहवीं रात्रि और नक्षत्र का भी ध्यान बहुत जरूरी है।

नोट— धृतराष्ट्र का अन्धा पैदा होना माता की अज्ञानता है।
पाण्डू का रोगी अनपुसंक पैदा होना माता की अज्ञानता है।



गर्भाधान की सोलह रात्रि

मासिक धर्म शुरू होने पर गर्भाशय का मुंह खुल जाता है और सोलह दिनों के बाद बन्द हो जाता है।

मासिक धर्म का समय तीन दिन से सात दिन तक का है ।

चार दिन — मासिक धर्म बन्द होने के बाद स्नान आदि कर उसके बाद तीन दिन तक संभोग नहीं करना चाहिए ।

१—पहले दिन संभोग करने से पुरुष के शरीर को हानि पहुँचती है ।

२—दूसरे दिन गर्भाशय से पैदा होने वाली संतान दस दिन में मर जाती है ।

३—तीसरे दिन गर्भाधान से पैदा होने वाली संतान विकलांग होती है ।

वर्जित तिथियाँ

शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा—एकादशी—त्रयोदशी चतुर्दशी—पूर्णमासी और अमावस्या पुरुष चन्द्रगुण प्रधान होने से चन्द्रमा का प्रभाव पुरुष जाति पर ज्यादा पड़ता है शुक्ल पक्ष में इसीलिए समतिथियों में पुरुषों का वीर्य बलवान होता है इसलिए — पष्ठी अष्ठमी-दशमी-द्वादशी को गर्भाधान करने से पुत्र की प्राप्ति होती है । स्त्री जाति सूर्य गुण प्रधान होने से चन्द्रमा का प्रभाव विषम तिथियों में स्त्री जाति पर पड़ता है । इसीलिए स्त्री का रज बलवान होता है । इसलिए पांचवी सप्तमी नवमी तिथियों में गर्भाधान से कन्या जन्म लेती है ।

अगर स्त्री पुरुष दोनों का रज वीर्य समान हो तो उस स्त्री के गर्भ से नपुसक पैदा होता है। सोलहवें दिनों में से सात दिन मासिक धर्म से सम्बन्धित होने से वर्जित है बाकि रहे नौ दिन इनमें भी ग्यारही और तेरहवी रात्रि वर्जित है अब रहे सात दिन गर्भाधान के हैं। इन दिनों में शुभ दिन जिसमें बृहस्पति शुक्र सोम और बुध तथा नक्षत्र प्रमान जिसमें हस्त पुष्य पुनर्वसु मृगशीर्ष पुल्लिंग नक्षत्र हैं बाकी सब स्त्रीलिंग हैं। मास बसाख माघ और कार्तिक शुभ हैं। इन मास तिथि दिन और नक्षत्र का जो ध्यान रखकर अगर गर्भाधान किया जाय तो सुपुत्र की प्राप्ति होगी।

सोलहवें दिन के बाद गर्भाशय का मुख बन्द हो जायेगा और उसके बाद मासिक धर्म अट्ठाईस दिन का होने कारण बारह दिनों में गर्भाधान नहीं हो सकता क्योंकि गर्भाशय का मुख सोलहवें दिन के बाद बन्द हो जाता है। इन बारह दिनों में संभोग करने से गर्भ धारण होने की संभावना नहीं रहती।

—चरक

जिस दिन गर्भाधान करना हो उस दिन का नक्षत्र तिथि दिन आदि ठीक हो उस दिन आहार में पुरुष को घी दूध चावल का आहार करना बहुत जरूरी है। स्त्री को तिल तेल उड़द का आहार करना बहुत जरूरी है। गर्भाधान के समय पुरुष पलंग पर चढ़ते वक्त अपना दक्षिण पांव पहले रखे स्त्री अपना बायां पांव पहले पलंग पर रखे स्वर भी दोनों का दायां चलना चाहिए कमरे में प्रकाश इतना होना चाहिए जिससे पति पत्नी एक दूसरे के चहरे को अच्छी तरह देख सकें

स्वर बदलना

अगर स्वर बदलना हो तो पलंग पर लेटकर अगर बायाँ स्वर चलाना हो तो दायाँ करवट लेट जाओ — आधे पौने घन्टे में स्वर बदल जायेगा अगर दायाँ स्वर चलाना हो तो बायीं करवट लेट जाइये । अगर स्वर ना बदलै तो जिस स्वर को चलाना हो दूसरे स्वर में रुई देकर बन्द कर दें । स्वर बदल जायेगा ।

तिथि कोष्ठ

जिस प्रकार यज्ञ कराने से बांझ स्त्री निश्चय ही पुत्र प्राप्त करती है वह विधि बताता हूँ — सुनो वैशाख माघ कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की पूर्णा ५-१०-१५ नंदा १-६-११ भद्रा २-७-१२ जया ३-८-१३ तिथियों में बृहस्पति शुक्र सोम बुध की श्रवण हस्त पुष्य पुनर्वसू धनिष्ठा मृगशिरा रेवती अश्विने नक्षत्रों में जिसमें चन्द्रमा बलिष्ठ हो उस समय प्रातः सांय विद्वानों के द्वारा यज्ञ करायें यज्ञ विधि पुत्रमेन्थ में लिखी है ।

हरिवंश पुराण

नोट—मासिक धर्म शुरू होने से ११वीं और १३वीं रात्रि सोर पक्ष से निदित हैं—

पुत्रेष्ठी यज्ञ

गर्भाधान का समय सोलह रात्रि का है। जिसमें से चार रात्रि मासिक धर्म की छोड़ कर बाकी बारह रात्रि बची। इन बारह रात्रियों में वृ० अ० उ० का वचन है कि इन दिनों से बारह दिन पुत्र मन्थ के लिए यज्ञ का होना बहुत जरूरी है, इस यज्ञ कार्य के दिनों में गर्भाधान होना चाहिए और इन दिनों में बारह दिन तक प्रातः यज्ञ में व्याहृत्याहुति के साथ मन्थन के ग्रास एक मन्त्र के साथ एक इसी प्रकार चार ग्रास भक्षण करने चाहिए। जो दस अन्नो के द्वारा तैयार किये जाते हैं।

दस अन्न

“वीदाना- यव-तिल माप अणु- प्रियंगु-गैहूं- मसूर-कुल्ली-खजूर इन सबको पांच पांच तोले लेकर कूट पीसकर तैयार करले इनके बारह भाग बना लें एक भाग प्रातः निकाल कर यज्ञ करने में पूर्व उस पर छः मासे शहद छः मासे घी छः मासे दही का सिंचन करें, सब को मिलाकर चार भाग बनालें यज्ञ में व्याहृत्याहुति के साथ पूर्व एक एक मन्त्र से एक एक भाग ग्रहण करें और बलि वैश्य के बाद पूर्ण आहुति से पूर्व (भात) जो बचा हो उसको पहले पुरुष खाये उसके बाद स्त्री खाये और उसके बाद शुद्ध जल ग्रहण करें। इन बारह दिनों में ही समयानुसार गर्भाधान क्रिया करनी चाहिए।”

वृद्धारण्यकोपामिषद्

यज्ञ की सामिग्री

अशोक छाल	२ तोला
दारु हल्दी	२ तोला
लोध्र	२ तोला
कमल केशर	"
माजू फल	"
सुगंध वाला	"
अर्जुन छाल	"
पीपल छाल	"
नाग कैसर	"
मिश्री	"
तिल	"
नारियल	"
यव	"
काक जंघा	"
चिकनी सुपारी	"
सतावर	"
खस	"
मजीठ	"
मोच रस	"
अनार फूल	"

इन्हे सबको कूट पीस कर सामिग्री तैयार करलें । यह सामिग्री १ दिन के यज्ञ के लिए है ।

घी	१ पाव
गूलर की लकड़ी	५ किलो

गर्भाशय की शुद्धि

वास के कोमल यत्र सोयाबीज अमलताश गूदा- वायवडंभ कलौजी मूलीबीज हंसराज अजमोध मजीठ अपामार्ग मूल तोदरी सुख हरमल इन्दायण मूल मध्ये सब एक एक तोला चिनक मूल आठ माशा गाजर के बीज दो तोला । कूट पीस कर चूर्ण बनालें दो तोला चूर्ण चाली तोले पानी में मिट्टी के पात्र में रात को भिगो दें । प्रातः कुवाथ बना लें दस तोले रहने पर छान कर पांच तोला कुवाथ गुड़ मिला कर प्रातः सांय चार रोज तक मासिक धर्म के दिनों में पीवे गर्भाशय शुद्ध हो जायेगा । इस क्वाथ का प्रयोग तब करना चाहिए अगर मासिक धर्म में कोई खराबी हो ।

—धनवंत्री

प्रकृति

मानव शरीर में तीन प्रमुख पदार्थ हैं । वात, पित्त और कफ । आयुर्वेद में ईन्हें 'प्रकृति कहा गया है । शरीर में ६० प्रतिशत वायु २० पित्त और २० प्रतिशत कफ होता है । वह संतुलित शरीर की स्थिति है । यदि इनका सन्तुलन बिगड़ जाता है, तो मनुष्य रोगी हो जाता है । तीनों प्रकृति का प्रभाव ।

कफ- वात और पित्त के मेल से बनता है । श्लेष्मा मज्जा स्निग्धता आदि कफ के परिणाम हैं ।

वात और पित्त के असन्तुलन से दाह, जलन, प्यास, वमन आदि रोग हो जाते हैं वात और कफ के असन्तुलन से दुर्बलता, रक्त संचार में कमी तथा तन्द्रा आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं ।

इन प्रकृतियों का गर्भस्थ शिशु पर भी प्रभाव पड़ता है । अतः जिस स्त्री में जिस प्रकृति की प्रधानता हो १ गर्भस्थ शिशु भी उसी प्रकृति का होगा । यदि माता किसी प्रकृति जन्य रोग से पीड़ित है, तो उसका शिशु भी उस रोग से पीड़ित होगा जैसे जुकाम (प्रतिश्याय) श्वास, आदि । यदि माता चाहती है कि गर्भस्थ शिशु स्वस्थ हो । उसे खानधानी रोग न हो तो माता को किसी विद्वान वैद्य से परामर्श करके उसके आदेश के अनुसार अपने आहार विहार को बदल कर शिशु की प्रकृति को बदलना चाहिए । चरक सूत्र अध्याय १ में लिखा है :-

वात का लक्षण—वायु रूक्ष, शीतल, लघु, सूक्ष्म, चंचल, विशद, और खर, इन भौतिक गुणों से युक्त होता है । इन गुणों से विपरीत गुणों वाले द्रव्यों से वायु का शमन होता है ।

च० ५९ श्लोक सू० अ० १

पित्त का लक्षण—पित्त गरम, तीक्ष्ण, द्रव्य, अम्ल, सर, कटु गुण युक्त होता है । इन गुणों से विपरीत गुण वाले द्रव्यों से पित्त का शमन होता है ।

च० ६० श्लोक सू० अ० १

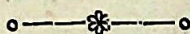
कफ का गुण—गुरु, शीतल, मृदु, स्निग्ध, मधुर, स्थिर और पिच्छल गुण वाला कफ होता है । इन गुणों से विपरीत गुण वाले द्रव्यों से कफ का शमन होता है ।

CC-0. In Public Domain. Part of the Arya Maha Vidyalaya Collection.

च० ६१ श्लोक सू० अ० १

साध्य रोगों का चिकित्सा सूत्र और असाध्य रोगों का चिकित्सा भाव जब देश, (भूमि और रोगी का शरीर) मात्रा (समुचित मात्रा, वय, बल शरीर, अग्नि, सात्त्विक आदि का विचार करने के बाद दी गई हो। और काल (आवस्थिक और नित्य) के विपरीत गुण वाले। हेतु और व्याधि से विपरीत या विपरीतार्थकारी भेषज) औषध का प्रयोग युक्ति पूर्वक किया जाता है। तब साध्य रोग नष्ट हो जाते हैं। असाध्य रोगों की चिकित्सा का उपदेश नहीं किया जाता।

च० सू० अ० १ ६२ श्लोक



गर्भ का उपघात (नाश करने वाले भाव)

उत्कट आसन से बैठना :— नीचे ऊंचे आसन पर बैठना कठिन आसन पर लगातार बैठना, वायु सूत्र, मल के वेग को रोकना, कठोर या अनुचित प्रकार से व्यायाम करना, तीक्ष्ण या ऊष्ण द्रव्यों को अधिक मात्रा में सेवन करना, अल्प मात्रा में भोजन आदि इनका जब गर्भवती स्त्री सेवन करती है तो गर्भाशय में गर्भ मर जाता है। या अकाल में उस गर्भ का स्राव हो जाता है, या गर्भ में ही सूख जाता है। किसी भी प्रकार गर्भाशय पर आघात लगने से या दबाव पड़ने से अधिक गहरे गढ़े या क्रूर में झाँकने से या (प्रसूति) ऊपर से गिरने वाले पानी की आवाज सुनने से या बार बार देखने से अकाल में ही गर्भपात हो जाता है। एकका

ऊंट, ज्यादा हिलने वाली सवारी अत्यन्त अप्रिय शब्दों के अधिक सुनने से गर्भ समय से पूर्व ही गिर जाता है। निरन्तर उत्तान-शयन करने वाली स्त्री के गर्भस्थ बालक के कण्ठ को नाभि के आश्रित नाड़ी बांध लेती है जिससे बालक की मृत्यु का भय बना रहता है।

जो गर्भवती स्त्री खुली जगहों में अकेली सोती हैं या रात में अकेली इधर उधर घूमती है वह पागल संतान पैदा करती है। गर्भावस्था में जो स्त्री सहवास में लगी रहती है उसकी संतान वदशक्ली निर्जञ्ज और स्त्री के वश में नहीं रहती। जो स्त्री गर्भावस्था में हमेशा शोकग्रस्त रहती है, उसकी संतान डरपोक पतली, बिना डील डौल के शरीर वाली अथवा अल्प आयु होती है। मन में सदां द्रोह रखने वाली गर्भवती स्त्री की संतानें दूसरों को दुख देने वाली (दुष्ट) ईर्षालु अथवा स्त्री के वश में ना रहने वाली होती है। गर्भावस्था में चोरी करने वाली स्त्री की संतानें अधिक परिश्रम करने वाली, अधिक दुर्बद्धि वाली बुरा कर्म करने वाली होती है। क्रोध करने वाली गर्भवती स्त्री की संतानें क्रोधी कपटी और परनिन्दक होती है। अधिक सोने वाली स्त्री की संतानें तन्द्रायुक्त, मूर्ख और मन्दाग्नि रोग से पीड़ित रहने वाली होती हैं। हमेशा शराब पीने वाली गर्भवती स्त्री अधिक प्यास से युक्त अल्प स्मरण शक्ति से युक्त चंचल मन वाली संतान को पैदा करती है।

जिस गर्भवती स्त्री को गोह का मांस अधिक प्रिय हो और उसे खाती हो उसकी संतान को सर्प, अकर्मरी, आदि रोग होते हैं। जिस गर्भवती स्त्री को सुअर का मांस अधिक प्रिय हो

और खाती है, उसकी संतानें लाल नेत्रों वालीं और खुरदरे वालों वाली होती हैं। मछली का मांस खाने वाली गर्भवती स्त्री की संतानें (चरनी वेश) जिसकी पलकों देर से झपकी जाय और नेत्र जकड़े रहें, पैदा होती है। जो गर्भवती स्त्री अधिक मधुर रस का सेवन करती है उसकी संतानें प्रेमही, गुंगी अधिक मोटी पैदा होती है। जो गर्भवती स्त्री खट्टे रस का अधिक सेवन करती है उसकी संतान रक्त पित्त रोग तथा आंख और त्वचा के रोग से पीड़ित होती है। जो गर्भवती लवण रस का अधिक सेवन करती है उसकी संतान शीघ्र ही शरीर में झुर्री पड़ जाना रोगों से पीड़ित होती है। जो गर्भवती कटु रस का अधिक सेवन करती है उसकी संतान बलहीन अल्प शुक्र वाली जो संतान पैदा न कर सके, पैदा होती है नपुसंक होती है।

जो गर्भवती स्त्री तिक्त रस का अधिक सेवन करती है उसकी संतानें शिखण्डी, क्षय, बलहीन विना डील डौल के कुरूप होती है जो गर्भवती स्त्री कषाय रस का अधिक सेवन करती है उस स्त्री की संतानें श्याम वर्ण वाली अनाह उदावर्त रोग से पीड़ित होती है।

आर्हतकर भावों का त्याग आवश्यक

अतः उत्तम गुण युक्त संतान की इच्छा रखने वाली स्त्री यदि बुरे आहार एवं व्यवहार को विशेष रूप से त्याग दें, सुन्दर आचरणों से युक्त रहती हुई अपने आत्मा की हितकारी आहार एवं विहार से रक्षा करे।

आठवे मास में गर्भ स्वरूप और ओजका अस्तित्व

आठवे मास में रस संवाहिनी के द्वारा ओज माता के गर्भ से हृदय में परस्पर आता जाता रहता है। क्योंकि गर्भ पूर्ण रूप से तैयार नहीं होता इसलिए माता आठवे मास में बार बार प्रसन्न और बार बार उदास हुआ करती है। अर्थात् जब ओज गर्भ के हृदय में चला जाता है तब माता उदास हो जाती है। और जब ओज माता के हृदय में चला जाता है तो माता प्रसन्न दिखाई देती है। इस प्रकार जब ओज गर्भ के हृदय में रहता है तो गर्भ प्रसन्न रहता है। जब ओज गर्भ से माता के हृदय में चला जाता है तो गर्भ में उदासी छायी रहती है। आठवे मास में यदि बालक का जन्म हो जाता है तो उसका जीवन संकट मय हो जाता है। क्योंकि ओज की स्थिति आस्थिर रहती है। इसलिए आठ मास का प्रसूत जीवित रहना मुश्किल है। जो के आहार एवं जिस जिस रोग का निदान बताया गया है। उन उन आहार एवं विहारों को जब गर्भवती स्त्री सेवन करती है तब उन उन रोगों से पीड़ित या भविष्य में पीड़ित होने वाली संतानें उत्पन्न करती है इस प्रकार इन गर्भ के उपघात या गर्भ में हानि करने वाले भावों की व्यवस्था कर दी गई है।



प्रश्न : वक्त्री और ईष्यारति संतान कैसे पैदा होती है ?

उत्तर : मेथुन काल में माता की मैथुन में इच्छा का ना होना अथवा माता का शरीर सूखा ना होकर मैथुन काल में टेढ़ा रहे या पिता के वीर्य में दुर्बलता हो तो बालक वक्त्री (विकलांग) पैदा होता है। या माता पिता की मैथुन करने की प्रबल इच्छा ना हो पर ईर्ष्या से मैथुन में प्रवृत्त हों तो उससे पैदा होने वाली संतान वलिक ईष्यारति (नपुसंक) पैदा होता है।

च०शा०अ०२ २०



(शरीर की रचना)

जैसे ऋतु भूमि बीज और जल के संयोग से बीज से अंकुर की उत्पत्ति होती है। वैसे ही ऋतु गर्भाशय रज और वीर्य इन चार पदार्थों के संयोग से संतान के अंकुर उगते हैं, इसे गर्भ स्थिति कहते हैं। पूर्वोक्त वस्तुओं के संयोग होने पर भी जो गर्भ स्थिति नहीं होती है उसके बहुत से कारणों में से मुख्य यह हैं।

- १- गर्भाशय में रोग होना गर्भाशय में मांस या मज्जा का बढ़ जाना, गर्भाशय में कीड़ा पैदा हो जाना गर्भाशय का दग्ध हो जाना, छोटी उम्र में संयोग से बच्चा पैदा हो जाते हैं।

(४२)

गर्भाशय का उलट जाना, गर्भाशय में वायु का बढ़ जाना, गर्भाशय में शीत पैदा हो जाना ।

- २- रजो धर्म में गड़बड़ी रहना, मासिक धर्म का न होना, ठीक समय पर जो प्रति २८ दिन होता है न होकर पहले या पीछे कई दिन वाद होना कम होना, बहुत ज्यादा होना ।
- ३- संभोग की अधिकता इससे पुरुष वीर्य शुक्र कीट में कमी आ जाती है । और वो इतने शक्ति हीन हो जाते हैं, कि डिम्ब प्रवेश नहीं कर पाते आदि ।
- ४- मन शक्ति की प्रतिकूलता कुछ दिनों तक संतान न होने से यह मान बैठना कि अब हमें संतान नहीं होगी ।
- ५- प्रेम का अभाव इस कारण स्त्री पुरुष एक दूसरे पर अनुरक्त नहीं हो सकते और गर्भ स्थिति नहीं हो सकती । डिम्ब में पुरुष रीट का मेल ना होना, स्त्री और पुरुष के आगे पीछे खलित होने से रज और वीर्य का मिलान नहीं होता यह व्यर्थ जाता है । मासिक धर्म के चार दिनों तक सम्भोग नहीं करना चाहिए इन दिनों में सम्भोग से गर्भ स्थिति नहीं होती । रक्त स्राव के साथ वीर्य बाहर आ जाता है और इससे स्त्री पुरुष दोनों ही रोग ग्रस्त हो जाते हैं ।

—देश दर्शन

रसायन

स्त्री वाजी कर्ण भी है और रसायन भी स्त्री से सम्पर्क वाजी कर्ण है । और स्त्री से विचार विमर्श रसायन है ।

घरों में डवल बेड का होना पति पत्नि के लिए बहुत ही हानिदायक है । जिससे संयमता नष्ट हो जाती है । कहा भी है ।

नारी की झाई पड़े, अन्धा होत भुजंग ।
वाकी का गति बावरे, जाके नारी हमेशा संग ॥

बहुतों को तो रोग भी पैदा हो जाते हैं । जैसे स्त्री को प्रदर जैसे रोग जो शरीर के लिए हानि कारक है । पुरुषों को शीघ्र पतन, मधुमेह, लाला प्रमेह अस्थमा जैसा रोग आ घेरते हैं । पत्नि पत्नि को हमेशा संयमता से रहना चाहिए । विषय भोगों को कम समय देना चाहिए । पति पत्नि को हमेशा ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहिए । व्रत पालन करने के लिए अच्छे साहित्य का स्वाध्यान करना चाहिए जिससे दोनों के अपने अपने शरीर के तत्व की रक्षा हो सके ।

एक बार सुकरात से उसके शिष्य ने प्रश्न किया ।

शिष्य : गुरुजी स्त्री पुरुष को प्रसंग कितनी बार करना चाहिए ।

गुरु : जीवन में एक बार ।

शिष्य : यदि इस से तृप्ती ना हो तो ।

गुरु : एक वर्ष में एक बार

शिष्य : यदि इससे भी सन्तुष्टि न हो तो

गुरु : महीने में एक बार

शिष्य : यदि इससे भी मन न भरे

गुरु : महीने में दो बार करे, परन्तु इससे मृत्यु शीघ्र आ जायेगी ।

शिष्य : इस पर भी इच्छा बनी रहे तो क्या करें

गुरु : फिर ऐसा करे, पहले कफन लाकर घर में रखले फिर चाहे जो करे ।

योग दर्शन में ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठायासु वीर्य लाभः ब्रह्मचर्य की दृढ़ स्थिति हो जाने पर सामर्थ्य का लाभ होता है । नियमानुकूल ब्रह्मचर्य धारण करने वाले के मन बुद्धि इन्द्रिय और शरीर में अपूर्व शक्ति प्रकट हो जाती है । स्त्री पुरुष अपने विचारों से अपना उत्थान कर सकते हैं । और पतन भी ।

ग्रहस्थ जीवन भी है मृत्यु भी है । सन्तान का अधिक होना भी शरीर के लिए हानिकारक है । इसलिए एक लड़की और एक लड़के की कामना करें जिससे जीवन सुखी हो ।

छा जाते हैं दुःख के मेघा,

जब कोई मन मानी करता है ।

अधिक संतान से दुख ही दुख है,

एक संतान से सुख मिलता है ॥

आर्य ससाज का प्रथम नियम

“सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उस सब का आदि मूल परमेश्वर है”

महर्षि दयानन्द ऋतम्भरा प्रज्ञा पूर्ण थे। अतः उनके द्वारा रचित एवं प्रयुक्त शब्द सटीक एवं अर्थ पूर्ण होना चाहिए। इस प्रथम नियम पर विचार करते हुए मुझे जैसी अनुभूति हुई उसे मैं सामान्य जनों के हितार्थ एवं विद्वज्जनों के संशोधनार्थ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

प्रस्तुत नियम में सर्वप्रथम सब पर विचार करना है। ‘सब’ शब्द सम्पूर्णता एवं एकाधिकता को व्यक्त करता है। अतः सत्य विद्या एक से अधिक हैं। वैदिक दृष्टि से तीन पदार्थ सत हैं—ब्रह्मा, जीव और प्रकृति। अतः इनसे सम्बन्धित जो भी विद्या है, वह सत्य विद्या है।

उपनिषदों में परा और अपरा विद्या का वर्णन है। परा ब्रह्म विद्या तथा ब्रह्मोत्तर विद्या अपरा कहलाती है। महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेद। दिभाष्य भूमिका में विशेष रूप से तथा अन्य ग्रन्थों में प्रसंगवशात् वेद में विभिन्न विद्याओं का उल्लेख किया है जैसे ब्रह्म विद्या, सृष्टि विद्या, गणित शिल्प, ऋतु-समय, वनस्पति तथा युद्धादि विद्या। चौदह विद्याओं का भी उल्लेख मिलता है वे हैं— १ ब्रह्म २ रसायन ३ गान ४ वेद ५ व्याकरण ६ ज्योतिष ७ जलतर ८ नट ९ धनुर्वेद

पदार्थों के सम्बन्ध में हम दार्शनिक-सांख्य वैजेषिक आदि की ऊहापोह को छोड़कर । सामान्यः जड़ वस्तुओं को पदार्थ कहते हैं । ये पदार्थ प्रधानतः दो प्रकार के होते हैं—१. सूर्य गुण प्रधान २. सोमगुण प्रधान । इन्हें स्त्री और पुरुष के आधार पर स्त्रीलिंग और पुल्लिंग भी कह सकते हैं । पदार्थों के निर्माण में सूर्य चन्द्र तथा वायु का सहयोग होता है । सूर्य की उष्णता तथा वायु के मेल से प्राणों की उत्पत्ति हुई । प्राण एवं चन्द्रमा के द्वारा सब पदार्थों की शक्ति प्राप्त होती है । सूर्य के द्वारा संसार के सब पदार्थों पर ६ रूपों में प्रभाव पड़ता है—

१. उत्पन्न होना २. बढ़ना ३. रुक जाना ४. विपरिस्मृते पकाना सम्पूर्णता ५. क्षीण होना ६. नष्ट होना ।

संसार में विविधता है रूप की रंग की गुणों की आकारादि की यह विविधता सूर्य गुण के कारण है ।

चन्द्रमा का कार्य सूर्य के द्वारा पुष्टि एवं उत्पन्न गुण तथा रसों को यथा स्थान स्थिर करना है । आयुर्वेदानुसार स्त्री अग्नि गुण प्रधान है तथा पुरुष चन्द्र या सोम गुण प्रधान । सूर्य अथवा अग्नि गुण की प्रधानता के कारण ही स्त्री में पुरुष से अधिक काम शक्ति होती है और साथ दस गुण भी अधिक और विशेष होते हैं—१. मृदुता २. सकुमारता ३. कोमलता ४. उत्साह ५. निर्मलनेत्र ६. रोम की न्यूनता ७. शरीर रचना ८. पाचन शक्ति ९. काँति १०. दीप्ति ।

(४७)

उक्त ज्ञान को पदार्थ विद्या कहते हैं। अन्य क्षेत्रों में कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

विद्युत शक्ति—यहाँ भी दो तार होते हैं एक गर्म और दूसरा ठंडा इनके मिलने पर ही प्रकाश होता है, कल कारखाने चलते हैं। इनके अलग होने पर सारा कार्य ठप्प हो जाता है।

मोटर साईकिल—एक सोम दूसरा गति देने वाला अग्नि गुण प्रधान पेट्रोल।

तोप और उसमें पड़ा गोला—उसे पदार्थ विद्या के द्वारा फेंका जाता है और वह फटकर विध्वंश करता है।

यज्ञकर्म—यज्ञ भी पदार्थ विद्या के द्वारा होते हैं। यज्ञ कुण्ड की अग्नि में जो औषधियाँ डाली जाती हैं वे भस्म हो जाती हैं। इन पदार्थों में पाँचों तत्व उपस्थित रहते हैं। पृथ्वी तत्व कुण्ड में रह जाता है जो कृषि में खाद एवं कुछ रोगों को भी शान्त करता है। जल तत्व वाष्प एवं अन्य तत्व धूम के आकार में सूर्य की किरणों द्वारा ऊपर वायु मण्डल में प्रवेश करते हैं तथा अग्नि के कारण असीम शक्ति सम्पन्न एवं सूक्ष्म होकर प्रदूषण को नष्ट कर प्राकृतिक वायु एवं आकाशीय जल को शुद्ध कर पृथ्वी के मानव एवं वनस्पतियों को शुद्धता एवं पुष्पता प्रदान करते हैं।

वही कारण है यज्ञ सूर्य के उदय रहते ही करना अधिक श्रेयशाली है। प्राचीन काल में यज्ञों के कारण शुद्ध अन्न जल प्राप्त होत था। इसीलिए शुद्ध भोजन एवं निषेधकारी भी होता था। सामान्य जन में देव पूजा अर्थात् विद्वानों के प्रति श्रद्धा एवं पार-

स्पर्शिक प्रेम (संगतिकरण) एवं देकर खाने की भावना (दान) प्रधान होती थी। यह पदार्थ विद्या का चमत्कार है।

वनस्पति—इस क्षेत्र में भी दो पदार्थ पृथ्वी अग्नि गुण प्रधान तथा वीज सोम गुण प्रधान है। चन्द्रमा औषधियों में रस भरता है और सूर्य उन्हें पुष्ट करता है। आकार एवं रंग देता है सूर्य के उदय होने पर पुष्प खिल उठते हैं सारा वातावरण सहक जाता है और उसके छिपते छिपते सब शान्त हो जाता है।

पक्षी—पक्षी को पदार्थ विद्या का ज्ञान है। चाहे कहीं भी विचरण करे किन्तु अण्डा देने के लिए निश्चित स्थान पर पहुँच जाता है। उन्हें अपने शरीर की गर्मी से पकाता है। तथा निश्चित समय पर फोड़ कर वच्चा निकाल लेता है। उसका यह ज्ञान सहज ज्ञान है। इसी प्रकार पशुओं कृमियों को भी है।

भवन निर्माण—ईंटों को बनाना उन्हें जोड़ना उनमें विशेष कार्यों के लिए विशेष व्यवस्था करना जैसे सोमनाथ मन्दिर में चुम्बक का बहुत अधिक प्रयोग था। फलतः अनेक द्वार लुटेरे आये और वे हथियारों के निष्क्रिय हो जाने के कारण भाग गये। सोमनाथ के मन्दिर के द्वार पर बहुत शक्तिशाली चुम्बक था। इसलिए लुटेरों के भाले, तलवार निष्क्रिय हो जाते थे। कुछ उनके हाथ से छूट कर चुम्बकीय स्थान पर चले जाते थे। यह पदार्थ विद्या है। इसे जानकर ही महम्मद गजनवी मन्दिर में पीछे की दीवार से बुसा।

CC-0. इसी प्रकार धारणावस्त का ज्ञान गृह जिसमें कुत्ता और पाण्डवों के लिए शकुनी और दुर्योधन ने पुरोचन नायक विशेषज्ञ

के द्वारा लाख रालचैवी के प्रयोग से वनवाया था जिससे आग लगाने पर सारा भवन जलकर भस्म हो जाये और उसमें ठहरे हुये कुन्ती पुत्रों सहित सब उसी के साथ भस्म हो जाये यह भी पदार्थ विद्या का ही चमत्कार था। जिस में विदुर के द्वारा भेजा गया एक खनिक जिसने महल में एक ऐसी सुरंग बनाई जिस के द्वारा समय से पूर्व ही पाण्डव आग लगा कर महल से बाहर निकल गये और अपनी जान बचा ली और महल बनाने वाले सभी जल कर भस्म हो गये। यह भी सत्यविद्या का चमत्कार है।

इसी प्रकार इन्द्रप्रस्थ में सय राक्षस द्वारा निर्मित सभा भवन जो पाण्डवों को बना कर दिया जिस में दुर्योधन को उसमें एक दीवार जो दरवाजे की तरह थी। दुर्योधन की बाहर निकलने में टकरा गया एक स्थान पर पानी समझ कर कपड़े ऊपर उठाना और जहां पानी था वहां उसमें गिर जाना आदि क्रियाओं से लजित होना और पाण्डवों के प्रति क्रोध पैदा होना यह सब पदार्थ विद्या का ही चमत्कार था जिस का आदि मूल परमेश्वर है।

आजकल दूरदर्शन पर महाभारत का प्रसारण हो रहा है। महाभारत में विचित्रवीर्य की माता तथा शान्तनु की पत्नी सत्यवती ने नियोग द्वारा धृतराष्ट्र, पाण्डु एवं विदुर को महर्षि वेदव्यास द्वारा अपनी पुत्रवधु से प्राप्त किया। धृतराष्ट्र का अन्धा होना, पाण्डु तथा विदुर दासी पुत्र बुद्धिमान नीतिज्ञ होगा यह ज्ञान पदार्थ विद्या से हुआ क्योंकि गर्भाधान के समय आँखें बन्द करना भयभीत होना आदि इसके कारण हैं।

गृह्याश्रम में नवीन प्रवेश करने वालों के लाभार्थ वेद्य होते के नाते पदार्थ विद्या के दो और उदाहरण प्रस्तुत हैं—महर्षि

मनु ने गृहस्थ धर्म पालन करते हुये भी ब्रह्मचर्य पालन करने का आदेश दिया है। उनके मतानुसार गृहस्थ को सुप्रजा चाहिए, सुपुत्र चाहिए एतदर्थ पुत्र की कामना रखने वाले को राजोदश होने के पश्चात् ६, ८, १०, १२, १४, १६, वी रात्रि तथा सुशील कन्या के इच्छुक दम्पति को ५, ७, ९, १५ वीं रात्रि ही गर्भाधान के लिए उचित है। ४, ६, ११, १३ वीं रात्रि निन्दित है। पूर्णिमा, अमावस्या तथा कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथियां त्याज्य हैं। इसका ज्ञान पदार्थ विद्या से ही होता है।

स्त्रियों के मासिक धर्म के सम्बन्ध में ज्ञातव्य है कि जिस प्रकार सौर्य चान्द्र तथा ईसवी मास में दिनों की संख्या विभिन्न होती है जैसे सौर्य मास ३० से ३२ दिन, चान्द्र २९ से ३० दिन, ईसवी २८ से ३१ दिन तक का होता है, उसी प्रकार स्त्रियाँ मासिक धर्म के अनुसार स्त्री का मास सुश्रुत और चरक के मत में १९, २७, २८, ३६ दिन का होता है। इसके अनुसार ही दस मास में सन्तान होती है :-

$$\begin{array}{ll} १९ \times १० = १९० \text{ दिन।} & २७ \times १० = २७० \text{ दिन।} \\ २८ \times १० = २८० \text{ दिन।} & ३६ \times १० = ३६० \text{ दिन।} \end{array}$$

१९० दिन का बालक जीवित रहता है, २७० तथा २८० दिन का बालक स्वस्थ होता है। ३६० दिन का बालक असाधारण बुद्धिमान और दीर्घायु होता है।

वेद में कहा है—“दशमे मासि सूतवे” ऋ० १०/१५४/३ यह पदार्थ विद्या का ही धर्मोपदेश है। इस प्रकार पदार्थ दो प्रकार

के हैं—अग्नि गुण प्रधान और सोम गुण प्रधान इनका ज्ञान ही पदार्थ विद्या है। इन पदार्थों को प्राप्त करना तथा उनका प्रयोग करना सत्य विद्या कहलाता है।

मनुष्य को ज्ञान स्वयं प्राप्त नहीं होता उसे प्राप्त करने वाला अथवा देने वाला मनुष्येतर ही होगा। इतिहास और हमारा अनुभव साक्षी हैं कि जिन वृक्षों को एकाकी छोड़ा गया वे कुछ नहीं जान पाये तथा पशुओं के द्वारा पाले गये मानव शिशु पशुओं के समान ही आचरण करने लगे इसलिए सब विद्याओं का आदिमूल परमेश्वर ही है।

यहां एक और बात ध्यान देने योग्य है। आर्य समाज का तीसरा नियम है—वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। प्रस्तुत नियम में वेद को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक बताया गया है। वेद अपौरुषेय है सृष्टि के आदि में परमेश्वर ने चार ऋषियों—ऋग्, अग्नि, युजुः, वायु, साम आदित्य, अथर्व—अंडिगरा के आत्मा में प्रकाशित किये इसलिए भी विद्याओं का आदि मूल परमेश्वर है।

अन्त में मनुष्य ने आज तक स्वयं कोई पदार्थ नहीं बनाया उसने प्रकृति से पदार्थों को लिया और उनके मिश्रण, भेदन आदि के द्वारा उन्हें दूसरा आकार प्रदान किया है। इसलिए भी विद्याओं का अदि मूल परमेश्वर ही है।

महामृत्यञ्जय

ओ३म् त्र्यम्बक यजा महे सुगन्धिं नुष्टि बर्धनम् ।

उर्वारिसिख्रिं भुवः स्वः तस्यैव बर्धनमृणोर्भुवः ।

ऋ० ७/५६/१२

अर्थ— हम लोग अच्छी प्रकार पुण्य रूप यश युक्त आत्मा और शरीर के बल को बड़ाने वाले तीनों कालों के ज्ञाता परमेश्वर की नित्य उपासना करें जैसे लता से जुड़ा हुआ खरबूजा पक कर अमृत होकर स्वतः छूट जाता है वैसे ही है परमेश्वर । हम यशस्वी जीवन्त वाले होकर जन्म मरण के बन्धन से छूट कर आप की कृपा से मोक्ष को प्राप्त करें ।

यह खरबूजा रूपी शरीर भी किसी को कष्ट देने वाला ना हो जैसे खरबूजा बेल को कष्ट नहीं देता ।

खरबूजे के गुण

- १- बेल की दण्डी के साथ लगे रहने पर एक जगह पड़े रहना बेल को कष्ट ना देना ।
- २- पकने पर बेल से अलग होना अलग होते वक्त बेल को कष्ट ना देना ।
- ३- पकने पर बेल से अलग होकर अपनी जगह पर फैलना ।

- ४- खरबूजे की अपनी मुन्दरता ऊपर खीची हुई धारियों से है ।
- ५- खरबूजा उपर से अलग दीखता है परन्तु अन्दर से एक होता है ।
- ६- खरबूजे के बीज भी पकने पर खरबूजे को छोड़ देते हैं ।
- ७- जब तक खरबूजा कच्चा होता है । तब तक वेल को नहीं छोड़ता । अगर कोई तोड़े तो वेल को भी तोड़ देता है ।
- ८- जब एक खरबूजा पक जाता है तब दूसरा खरबूजा भी उस की खरबू से पक जाता है ।
- ९- खरबूजा पेशाब के रोगों में बहुत गुणकारी है ।
- १०- खरबूजे को अगर उंगली दिखाओगे तो खरबूजा गल जावेगा ।

खरबूजा गुण कारी होने से मन्त्र में खरबूजे की ही उपमा दी है ।

❀ तत्व ❀

जिस प्रकार किसान भूमि में बीज बोने से पूर्व भूमि और उस भूमि में से खर पतवार को निकाल कर शुद्ध कर लेता है । उसी प्रकार उस भूमि में बोने के लिए बीज को भी विधि पूर्वक तैयार करता है । जब बीज और भूमि तैयार हो जाते हैं । तो

समय पर बीज को बो देता है। उसके बाद भूमि की देख भाल समय पर खाद पानी से करता है। जब उस भूमि में बोया हुआ अन्न तैयार हो जाता है। वह शुद्ध और पौष्टिक अन्न को जो ग्रहण करेगा उसका शरीर भी बलवान होगा और उत्तम संतान पैदा होगी। उत्तम संतान के लिए भी पहले तैयारी करनी होगी पति पत्नी की पहले ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना होगा। जितना अधिक से अधिक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करोगे उतना ही रज वीर्य बलवान होगा।

जब मासिक धर्म के बाद गर्भाशय शुद्ध हो जाये उसके बाद शास्त्रांत विधि जो इस माता और उत्तम संतान में लिखी गई है। गर्भाधान करें। यह विधि भी आयुर्वेद से ली गई है। जिसे उपवेद भी कहा जाता है। जिस प्रकार परमात्मा ने आदि सृष्टि में ऋषियों को वेदों का ज्ञान दिया था उसी प्रकार परमात्मा ने ही आयुर्वेद का ज्ञान सुश्रुत चरकादि ऋषियों को दिया। जिन्होंने सुश्रुत और चरकादि ग्रन्थों में लिखा इसी ज्ञान से सृष्टि में आहार विहार के प्रतिकूल चलने से पैदा हुए रोगों का निर्वान किया जाता है।

संसार में जितने भी चिकित्सालयों में पदतीया यूनानी होमयो पन्थी अलोपन्थी शल्य चिकित्सा आदि हैं यह सब सुश्रुत और चरक का ही भाग हैं। मैंने भी जो कुछ इस माता और उत्तम संतान में लिखा है। सुश्रुत और चरकादि ग्रन्थों से ही लिखा है। मैं आशा करता हूँ कि आप इसे ध्यान पूर्वक पढ़कर भविष्य में पैदा होने वाली संतान को रोगों और विकलांगता से मुक्त पैदा करेंगे।

अन्धकार के पथ पर चलकर,

ना कुछ प्राप्त किया ना होगा।

उत्तम संतान प्राप्त करने का

ज्ञान इसे पढ़ने से होगा ॥

उपसंहार

ऋतुकाल सोलह रात्रि का है। जिसमें स्त्री गर्भ धारण कर सकती हैं। इन सोलह रात्रिमें से चार रात्रि मासिक धर्म की वर्जित चार के बाद तीन रात्रि गर्भाधान करने से बालक और पिता के ऊपर बुरा प्रभाव पड़ता है ग्यारहवीं और तेरहवीं भी निन्दित हैं। यह सब मिलकर नौ रात्रि वर्जित हैं। बाकी सात में शुभ दिन प्रतिपदा होना, अष्टमी कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी दोनों अमावस्या पूर्णिमा इन सात दिनों में आ जाय वह भी वर्जित हैं। बाकी बची एक रात्रि उसमें भी शुभ दिन सोम दुध शुक्र ब्रह्मस्पति हों और शुभ तिथि शुक्ल पक्ष चतुर्थी पष्ठी अष्टमी दशमी द्वादसी पुत्र के लिए। पाचवीं सातवीं नौमी कन्या के लिए। नक्षत्रों में पुष्य हस्त पुनर्वसु मृगशीर्ष पुत्र के लिए बाकी कन्या के लिए। वैशाख माघ और कार्तिक का आपस में मिलाना सुसन्तान के लिए बहुत जरूरी है।

इसी कारण सीता जी को लवकुश जो जुड़वे ही पैदा हुए थे एक सुसन्तान के लिए छद्मवीस वर्ष बिताने पड़े। इसी प्रकार रूक्मणी ने एक संतान पैदा करने में बारह वर्ष प्रतीक्षा की जिससे एक प्रद्युम्न पैदा हुआ। इसी प्रकार सुभद्रा ने अभिमन्यु को पैदा करने में इसी समय की प्रतीक्षा में छः वर्ष व्यतीत किये। इसी प्रकार कौशल्या ने राम को केकई ने भरत को सुमित्रा ने लक्ष्मण और शत्रुघन को कृष्ण बलराम गांधी दयानन्द जवाहर लाल, भगतसिंह असफाक उल्लाह को भी इसी समय के अनुसार मातृ शक्ति ने पैदा किया। इसी प्रकार सन्तों में गुरु नानक देव, कबीर भक्त रविदास, तुलसीदास, सैन भक्त मोहम्मद जी, शुभशीह, धर्म

(५६)

व्याध आदि महापुरुषों को भी माताओं पर पैदा किया। जैसे सीता सावित्री रु अंजना, जीजाबाई आदि अनेकों माताओं गर्व है।

यह भारत सब देशों का गुरु र भारत में आकर शिक्षा ग्रहण करते थे पहले से सी तैयारी करनी पड़ती है। शिक्षा कन्याओं को पूर्ण रूप से देती थी। इसी प्रकार पिता पुत्र को भी शिक्षा देते थे। आज के समय में माता पिता को ही पता नहीं कि संतान क्या चीज है। आज की संतानें जवरदस्ती से पैदा होती हैं। कुछ तो पैदा होते ही मर जाती हैं जो भाग्य से बच गया वह नव्वे प्रतिशत रोगी होती है। सारी आयु दुख भोगती है। जिसे समय पर खेत में बीज खाद पानी का ध्यान रखना बहुत जरूरी है उसी प्रकार संतान का भी ध्यान रखना बहुत जरूरी है। इसी में आप सबका कल्याण है। इति !

नोट :— इस पुस्तक की छपाई का कार्य श्री सत्यदेव आर्य आ० स० नया गांव ख्वाजपुरा एवं श्री प्रेमचन्द जी मालागढ़ निवासी की अथक मेहनत से छाप कर तैयार की गई है।

धन्यवाद !

❀ समाप्तम् ❀